International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 329-331

वैश्विक अस्थिरताः स्थिति और समाधान, विश्लेषण वैश्विक परिप्रेक्ष्य में

डॉ० विद्याधर पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सैदाबाद, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

शोध पत्र सार

अपने विकास क्रम में मानव अनेक संकटों से उबरकर जिया। इस संकटकाल और संस्कृत निर्माण दोनों में ही नारी मानव विकास क्रम का हिस्सा अवश्य रही होगी। नैसर्गिक नियमों के कारण नारी–पुरूष न केवल समीप आये बल्कि उन्होंने विकास क्रम में एक दूसरे की आवश्यकता को समझा होगा। यह वह काल था जब मानव का संवेदना के स्तर पर विकास होने लगा। यह विकास उसे अन्य जंगली जीवों से अलग रहने को विवश करने लगा।

वैसे तो अभी तक आतंकवाद की सर्वस्वीकृत वैश्विक परिभाषा नहीं बनी है तथापि मोटे तौर पर, किसी विचार विचाराधात्मक आधार पर की गई हिंसा, जिसमें बड़ी तादात में निर्दोष आम जनता मारी जाती है, आतंकवादी घटना कहलाती है। आतंकवाद का क्षेत्र विस्तार अत्यन्त तीव्र गति से हो रहा है। पूर्व में कुछ क्षेत्रों तक सीमित रहने वाले आतंकवाद ने आज सम्पूर्ण विश्व में अपने पैर पसार दिए हैं। इस बात का उदाहरण इसी बात से मिलता है कि विभिन्न देशों के द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सम्बन्धों में तथा विभिन्न वैश्विक संगठनों की बैठक में आतंकवाद का मुद्दा और इस रणनीति की बातचीत अनिवार्य सी हो गयी है। इससे यह प्रश्न उठता है कि वास्तव में आतंकवाद है क्या? क्या उग्रवादी हिंसा, डकैतो की लूटपाट, तथा नक्सलवाद व क्षेत्रवाद की हिंसाएं आतंकवादी कार्रवाइयां नहीं है? यदि नहीं तो इनमें अंतर क्या है? आतंकवाद के विशिष्ट गुण क्या हैं? वैश्विक तथा भारतीय परिस्थितियों में आतंकवाद का प्रसार कितना है? इसके संगठन कौन से हैं। इसके कारण रूप और उद्देश्य क्या हैं? और अंतिम प्रश्न यह है कि आतंकवाद की समस्या का समुचित समाधान क्या है? इन प्रश्नों का उत्तर हम आतंकवाद का विवेचन और विश्लेषण करके समझ सकते हैं।

मुख्य शब्द : वैश्विक आतंकवाद, स्थिति और समाधान, बहुपक्षीय सम्बन्ध, नक्सलवाद व क्षेत्रवाद, वैश्विक तथा भारतीय परिस्थितियां।

प्रस्तावना

जनसंख्या की वृद्धि ने मानव को अन्य जंगली जीवों की तुलना में अधिक बलवान बना दिया। इसलिए मानव समूहों ने प्रजनन काल में नारी की विशेष सुरक्षा की व्यवस्था की। धीरे–धीरे नारी इस सुरक्षा की आदी हो गयी और पुरूषों में नारी पर नियंत्रण की भावना बढ़ने लगी।

उग्रवाद तथा डाकुओं द्वारा की गई हिंसा को आतंकवाद की श्रेणी में नहीं रखते हैं। कारण यह है कि उग्रवाद मूलतः वैचारिक उग्रता तक सीमित होता है। इसमें अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु हिंसा का सहारा नहीं लेते जबकि आतंकवाद का एक प्रमुख आधार ही हिंसा है। इसी प्रकार डाकुओं द्वारा की गई निर्दोष लोगों की हत्याएं भी आतंकवाद में शामिल नहीं की जाती हैं। कारण यह है कि डकैतों द्वारा डकैती करने में उनका निजी स्वार्थ छिपा रहता है; साथ ही उनकी कोई विचारधारा भी नहीं होती है। इसके विपरीत आतंकवाद एक ठोस व निश्चित विचार पर आधारित होता है और इस विचार के समर्थक लोग इसे इतना पवित्र और ऊंचा स्थान देते हैं कि इसके लिए वे न किसी को मारने से डरते हैं, न खुद के मरने से। आतंकवाद का ही छोटा रूप भारतीय परिप्रेक्ष्य नक्सलवाद है। है तो यह आतंकवाद ही किन्तु पश्चिम बंगाल के एक क्षेत्र नक्सल से प्रारंम्भ होने के कारण इसे नक्लसवाद कहा गया।

क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से आज सम्पूर्ण विश्व ही आतंकवाद का आंगन हो गया है। अपने आरंम्भिक समय में आतंकवाद का प्रसार विश्व के कुछ खास क्षेत्रों तक सीमित था जैसे कश्मीर; चेचन्या तथा पश्चिम व मध्य एशिया के कुछ देशों में किन्तु इसकी गति, अमेरिका में ग्यारह सितम्बर को विश्व व्यापार को केन्द्र को नष्ट होने के बाद बहुत तेजी से बढ़ी। इस सन्दर्भ में यूनाइटेड किंगडम में हुए ट्यूब ट्रेनों में विस्फोट तथा हीथ्रो हवाई अड्डे पर विस्फोट को उदाहरण स्वरूप देख सकते हैं। रूस के चेचन्या, बांग्लादेश में पिछले वर्ष हुए एक ही दिन में सैकड़ो विस्फोट, श्रीलंका में एल0टी0टी0ई0 द्वारा कोलम्बो के सैन्य बेस पर हमला; अफगानिस्तान में आए दिन होने वाले विस्फोट तथा हाल ही में भारतीय दूतावास पर हमला; पाकिस्तान की पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो तथा पूर्व में भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्याएं, आतंकवाद के घिनौने और अमानवीय उदाहरण है।

भारत में मुम्बई जयपुर, लखनऊ, बनारस, फैज़ाबाद आदि शहरों के साथ ही साथ अजमेर शरीफ तथा अक्षरधाम मन्दिर (गुजरात) जैसे धार्मिक स्थलों को भी आतंकवादियों ने अपना निशाना बनाया। कश्मीर में तो आए दिन आंतकी कार्रवाइयां होती ही रहती हैं। पिछले दिनों में बंग्लौर और अहमदाबाद जैसे औद्योगिक शहरों मे भी बम विस्फोट हुए तो अभी कल ही देश की राजधानी दिल्ली में श्रंखलाबद्ध बम बिस्फोटों में सैकड़ों लोगों की जाने गई। खुफिया एजेंसियों ने पहले ही सूचित किया था कि आतंकवादियों का कोड बैड (BAD) है जो वास्तव में उपरोक्त शहरों को ही सूचित करता था। अब तक का बड़ा विस्फोट, जिसने भारतीय संप्रभुता व अस्मिता को चुनौती दी भारतीय संसद पर हुआ हमला था।

इन कार्रवाइयों के पीछे कुछ प्रमुख संगठनों का हाथ होता है जिनमें

प्रमुख रूप से लश्कर–ए–तैयबा, हिजबुल मुजाहिदीन, इंडियन मुजाहिदीन, हूजी, एल0टी0टी0ई0 तथा उल्फा आदि हैं।

राजनीतिज्ञों समाजशास्त्रियों तथा समाज के बुद्धिजीवी वर्ग ने आतंकवाद के प्रसार हेतु कुछ कारणों को ज़िम्मेदार ठहराया है। इनमें मुख्य रूप से आर्थिक असमानता, गरीबी, पिछड़ापन आदि शामिल हैं। कुछ लोग इसके लिए 'सामी धर्मों' (यहूदी, ईसाई, इस्लाम) में पाए जाने वाले गुण धार्मिक व्यावर्तवाद (धार्मिक कट्टरता) को भी ज़िम्मेदार मानते हैं। इन बातों का परीक्षण करें तो हम पाते हैं कि उपरोक्त बातें कुछ हद तक तो सही है पर पूर्णतः नहीं। वास्तव में ये सारे कारण निचले स्तरों पर आतंकवादियों की फौज तैयार करने के काम में आते हैं न कि आतंकी संगठनों के सरगना को बनाने में। आतंकवादी संगठनों के मुखिया वास्तव में, उच्च शिक्षित लोग हैं, जो अकूत सम्पदा के स्वामी भी है, उदाहरण स्वरूप 'ओसामा–बिन– लादेन जो लश्कर–ए–तैयबा का प्रमुख है, अमेरिका (अलकायदा) विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग का डिग्री धारक हैं, साथ ही अरबों डॉलर का मालिक। इसी प्रकार जवाहिरी व प्रभाकरण आदि आतंकवादी संगठनों के प्रमुखों को उदाहरण स्वरूप देख सकते हैं। अब प्रश्न उठता है कि उच्च शिक्षित व अमीर लोगों को आतंकवादी कार्रवाई की ज़रूरत क्यों थी? इसका सही उत्तर है– ''सापेक्ष वचन'' की भावना। सापेक्ष वचन से तात्पर्य है कि एक वर्ग को दूसरे की तुलना में लगे कि वह पक्षपात या भेदभाव का शिकार है। ऐसा वचन वास्तव में चाहे न हों किन्तु उसका लगना ही पर्याप्त है। सापेक्ष वचन की मानना को विद्वानों ने आतंकवाद की जड़ माना है।

इस सापेक्ष वचन का बड़ा कारण पश्चिमी देशों का तीव्र विकास रहा। एक ही मुख्य धर्म 'यहूदी' से निकलने वाले दो धर्मों–ईसाई व इस्लाम के मध्य सामाजिक, आर्थिक स्तर पर विकास का इतना बड़ा अन्तर, सापेक्ष वचन की भावना को इस्लामी समूह में जन्म देता है, ऐसा कुछ विद्वानों का मानना है फिर एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अमेरिकी दादागिरी ने भी आतंकवाद को उकसाने में काफी सहायता की। पश्चिम व मध्य एशिया के तेल देशों पर अमेरिकी हमले ने इस्लामी आतंकवादियों को अपने अस्तित्व को बचाने हेतु प्रेरित किया। रूस के पूर्व राष्ट्रपति पुतिन का कथन भी है कि अमेरिकी नीतियों से दुनिया सुरक्षित होने के बजाय अधिक असुरक्षित हो गयी है। इस प्रकार हम देखते हैं कि एकल ध्रुवीय विश्व व्यवस्था भी कुछ हद तक इसके लिए ज़िम्मेदार है।

1990 के दशक में सोवियत संघ विघटोपरान्त ''फ्रांसिस फुकोयामा'' ने इतिहास के अंत की बात की तो डेनियल बेल ने विचारधारा की अंत की। किन्तु आगे चलकर प्रसिद्ध पाश्चात्य चिंतक सैमुअल पी0 हंटिंगटन ने कहा कि इतिहास समाप्त नहीं हुआ है बल्कि विचारधाराओं के संघर्ष (क्लैश आफ सिविलाइजेशन) के रूप में भी आतंकवादी घटनाओं को विभिन्न विचारकों द्वारा देखा जाता है किन्तु वास्तव में देखे तो यह आर्थिक स्तर पर संघर्ष अधिक प्रतीत होता है धार्मिक स्तर पर कम।

हाल ही में एक नई बहस अमेरिकी पत्र न्यूयार्क टाइम्स ने छेड़ दी। इस पत्र के अनुसार 9/11 की अमेरिकी घटना में आतंकवादियों के साथ–साथ अमेरिका इस्राइल भी दोषी है। कारण यह कि अमेरिका, इराक पर आक्रमण करने का बहाना खोज रहा था। किन्तु वास्तव में देखे तो यह एक अत्यंत गंभीर आरोप है और जब तक इस बात की पुष्टि न हो जाए इस पर कुछ भी कहना अनुचित है।

अब यदि हम आतंकवाद के रूप को देखे तो ये मुख्यतः दो प्रकार के दिखाई देते हैं– प्रथम राज्य समर्थित तथा द्वितीय राज्य विरोधी। राज्य समर्पित आतंकवाद के अंतगर्त कुछ विद्वान इस्राइल जैसे देशों की नीतियों को रखते है। राज्य विरोधी आतंकवाद को उदाहरण में भारत के प्रथम चरण के क्रान्तिकारी आतंकवाद को देख सकते हैं। पुनः एक अन्य आधार पर आतंकवाद को दो वर्गों में बांट सकते है–प्रथम में भाषायीः नृजातीय धार्मिक आदि आधारों पर किया जाने वाला आतंकवाद है। दूसरे वर्ग में विचाराधात्मक आधार पर किए जाने वाले आतंवाद को रख सकते हैं जिसमें मार्क्सवादी, लेनिनवादी तथा माओवादी विचारधारा के आधार पर होने वाला आतंकी घटनाएं आती हैं।

आतंकवादियों का प्रमुख उद्देश्य देखें तो हमें पता चलता है कि जिस वर्ग, जाति, समुदाय, धर्म या देश की तुलना में ये अपने को वंचक की स्थिति में पाते है, उसे अपने बराबर लाने के लिए (सभ्यता के स्तर पर) तथा अपनी श्रेष्ठता मनवाने के लिए (शक्ति के स्तर पर) ये कार्य करते हैं और इस हेतु दुनिया को आतंकी कार्रवाइयों से भयाक्रांत करना इन्हें सबसे आसान, सुविधाजनक व कारगर तरीका लगता है।

इन सब परिप्रेक्ष्य में हमारे मस्तिष्क में प्रश्न उठता है कि क्या इस अमानवीय, (पाश्विक) घृणित व जघन्य घटना व कार्रवाई का कोर्ठ समाधान भी या नहीं? वास्तविकता यह है कि किसी भी समस्या का समाधान होता ही है। क्योंकि, आतंकवाद एक वृहद जटिल समस्या हसै अतः इसका समाधान भी कई स्तरों पर करना होगा। इसके लिए कुछ दीर्घकालिक व कुछ अल्पकालिक कार्यक्रम बनाने होंगे। दीर्घकालीन प्रावधानों में निम्न कार्यक्रम बनाने चाहिए–प्रथम विश्व के सभी देशों के बीच व सभी देशों के सभी वर्गों, जातियों, समूहों के मध्य सामाजिक न्याय व अधिकार की पहुंच बनाना। द्वितीय यह कि वैश्विक गांव की संकल्पना में विभिन्न देशों की संस्कृतियों को एक सांचे में ढालने की कोशिश न की जाए। इसके लिए भारत की सामाजिक संस्कृति को उदाहरण स्वरूप सामने रख सकते है। तृतीय यह कि गांधीवादी विचारधारा तथा सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता पर सम्पूर्ण विश्व बल दे। चतुर्थ–शिक्षा व स्वास्थ्य तथा अवसर की समता सब को उपलब्ध हो। अंतिम यह कि मानवाधिकारों तथा सामाजिक व मूल्यगत लोकतंत्र को बढ़ावा दिया जाये न कि राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना हेतु, बल प्रयोग का उपयोग किया जाये।

इस दीर्घ कालीन उपायों के अतिरिक्त हमें कुछ अल्पकालीन व त्वरित कार्रवाई के उपाय भी अपनाने चाहिए जैसे–प्रथम, विश्व स्तर पर आतंकवाद की सामान्य परिभाषा तय कर उस पर सभी देशों को शामिल कर आतंकवाद के खात्मे हेतु एक व्यापक संधि की जाये। द्वितीय यह कि आतंकवादी कार्रवाइयों में लिप्त लोगों व आतंकियों को शीघ्रातिशीघ्र न्याय कर कठोर दण्ड दिया जाये। तृतीय आम जनता को आंतकी कार्रवाई से बचने का प्रशिक्षण दिया जाए। (हाल की दिल्ली बम बिस्फोट में लोगों को प्रशिक्षण प्राप्त होने के कारण ही इन क्षेत्रों मे जनधन की हानि कम करने में मदद मिली थी)। चतुर्थ खुफिया एजेंसियों का एक समन्वित ढांचा तैयार किया जाये। और अन्तिम तौर पर अमेरिका तथा रूसी पद्धति को आतंकवादियों से निपटने के लिए अपनाया जाए। इन नीतियों में आतंकवादियों को मुंह तोड़ जवाब देने की पद्धति अपनायी जाती है।

निष्कर्ष– यह कहा जा सकता है कि आतंकवाद की सम्पूर्ण विवेचना के साथ यदि हम उपरोक्त समाधान को अपनाएं तो आतंवाद, आने वाली पीढ़ियों के लिए अतीत की घटना बन जायेंगी। हम आशा कर सकते हैं कि वैश्विक एकजुटता के सामने, आतंकवाद नहीं ठहर सकेगा। आशा व आत्म विश्वास के साथ हम कह सकते हैं–

''हम होंगे कामयाब हम होंगे कामयाब एक दिन मन में हैं विश्वास पूरा है विश्वास हम होंगे कामयाब एक दिन होगी शान्ति चारों ओर होगी शान्ति चारों ओर एक दिन मन में है विश्वास पूरा है विश्वास

हम होंगे कामयाब एक दिन।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एस. के सिंह– सामाजिक मानवशास्त्र, पृष्ठ–56।
2. एस. के सिंह– सामाजिक मानवशास्त्र, पृष्ठ–57।
3. समाजवादी नादीवादी विची विशेनिका की–आन पेट्रियार्की में उद्धत।
4. मनोज सिन्हा, समकालीन भारत : एक परिचय, 2014।
5. एंगल्स–ओरिजन आफ द फैमिली, प्रायवेट एण्ड द स्टेट पृष्ठ–1881।
6. गार्ड लार्नर–द क्रियेशन आफ पेट्रियार्की आक्सफोर्ड एण्ड न्यूयार्क पृष्ठ 217।
7. समाजवादी नादीवादी विची विशेनिका की–आन पेट्रियार्की में उद्धत।
8. द्विजेन्द्र नारायण झा, कृष्ण मोहन श्रीमाली, प्राचीन भारत में इतिहास 2005।